विचारक, विश्वास और इमारतें

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» साँची स्तूप: एक ऐतिहासिक झलक

प्रश्न 1 (आसान). साँची स्तूप किस राज्य में स्थित है?
उत्तर – मध्य प्रदेश

प्रश्न 2 (आसान). 19वीं सदी में साँची स्तूप में किन यूरोपीय देशों ने रुचि दिखाई?
उत्तर – फ्रांस और इंग्लैंड

प्रश्न 3 (मध्यम). जॉन मार्शल ने साँची पर अपने महत्वपूर्ण ग्रंथों को किसे समर्पित किया?
उत्तर – सुल्तानजहाँ बेगम को

प्रश्न 4 (कठिन). साँची स्तूप को 'खुदाई करने वालों' और 'यूरोप के संग्रहालयों में ले जाने वालों' से बचाने में किन दो कारकों ने मुख्य भूमिका निभाई?
उत्तर – भोपाल की बेगमों के विवेकपूर्ण निर्णय और शायद यह सौभाग्य कि इस पर किसी रेल ठेकेदार की नज़र नहीं पड़ी।

» ईसा पूर्व प्रथम सहस्राब्दि के विचार और वाद-विवाद

प्रश्न 5 (आसान). ईसा पूर्व प्रथम सहस्राब्दि में भारत के किन्हीं दो विचारकों के नाम बताओ।
उत्तर – महावीर और बुद्ध।

प्रश्न 6 (आसान). ईसा पूर्व प्रथम सहस्राब्दि में किस देश में ज़रथुस्त्र जैसे चिंतक का उदय हुआ?
उत्तर – ईरान।

प्रश्न 7 (मध्यम). प्रथम सहस्राब्दि में विचारक किन मुख्य विषयों पर चिंतन कर रहे थे? किन्हीं दो का उल्लेख करें।
उत्तर – जीवन का अर्थ, मृत्यु के बाद जीवन की संभावना, पुनर्जन्म और कर्मों का फल।

प्रश्न 8 (कठिन). वैदिक परंपरा में यज्ञों का क्या महत्व था? बाद में लोगों ने इन यज्ञों के बारे में क्या सवाल उठाने शुरू किए?
उत्तर – वैदिक परंपरा में यज्ञ देवी-देवताओं (जैसे अग्नि, इंद्र, सोम) को प्रसन्न करने और मवेशी, पुत्र, स्वास्थ्य, लंबी आयु आदि के लिए किए जाते थे। शुरू में ये सामूहिक होते थे, बाद में घर के मालिक भी करने लगे और राजा राजसूय, अश्वमेध जैसे बड़े यज्ञ करते थे। लेकिन बाद में उपनिषदों के दौरान लोगों ने इन यज्ञों के महत्व पर सवाल उठाना शुरू कर दिया, क्योंकि वे जीवन के गहरे दार्शनिक अर्थों और मोक्ष की तलाश में थे, जो सिर्फ यज्ञों से नहीं मिल रहा था।

» जैन धर्म का उदय और महावीर का संदेश

प्रश्न 9 (आसान). महावीर जैन धर्म के कौन से तीर्थंकर थे?
उत्तर – महावीर जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे।

प्रश्न 10 (आसान). जैन धर्म का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत क्या है?
उत्तर – जैन धर्म का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत अहिंसा है।

प्रश्न 11 (मध्यम). तीर्थंकर का क्या अर्थ है और महावीर से पहले कितने तीर्थंकर हुए थे?
उत्तर – तीर्थंकर वे महापुरुष होते हैं जो पुरुषों और महिलाओं को जीवन रूपी नदी के पार, यानी मोक्ष तक पहुंचाते हैं। महावीर से पहले 23 तीर्थंकर हुए थे।

प्रश्न 12 (कठिन). जैन धर्म के अनुसार मोक्ष प्राप्त करने के लिए किन्हीं तीन अनिवार्य नियमों का वर्णन करें।
उत्तर – मोक्ष प्राप्त करने के लिए संसार का त्याग, तपस्या और पाँच महाव्रतों (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) का पालन अनिवार्य है।

» बुद्ध और ज्ञान की खोज

प्रश्न 13 (आसान). सिद्धार्थ किस कबीले के सरदार के पुत्र थे?
उत्तर – शाक्य कबीले के.

प्रश्न 14 (आसान). गृहत्याग के बाद सिद्धार्थ को किस नाम से जाना गया?
उत्तर – बुद्ध या ज्ञानी व्यक्ति.

प्रश्न 15 (मध्यम). सिद्धार्थ ने ज्ञान प्राप्ति के लिए कौन से अतिवादी तरीके को त्याग दिया था?
उत्तर – उन्होंने शरीर को अधिक से अधिक कष्ट देने वाले तरीके को त्याग दिया था.

प्रश्न 16 (कठिन). सिद्धार्थ को किन चार दृश्यों ने गृहत्याग के लिए प्रेरित किया?
उत्तर – एक बूढ़ा व्यक्ति, एक बीमार व्यक्ति, एक मृत शरीर (लाश) और एक शांत संन्यासी.

» बुद्ध की शिक्षाएँ और मध्यम मार्ग

प्रश्न 17 (आसान). बुद्ध के अनुसार, विश्व की प्रकृति कैसी है?
उत्तर – अनित्य (बदलने वाला) और आत्माविहीन।

प्रश्न 18 (आसान). दुख का मूल कारण क्या है?
उत्तर – इच्छाएँ और तृष्णाएँ।

प्रश्न 19 (मध्यम). मध्यम मार्ग से आप क्या समझते हैं? एक उदाहरण दीजिए.
उत्तर – मध्यम मार्ग का अर्थ है न अत्यधिक तपस्या और न अत्यधिक भोग-विलासिता, बल्कि दोनों के बीच संतुलन स्थापित करना। उदाहरण के लिए, भूख लगने पर न बहुत ज़्यादा खाना और न भूखा रहना, बल्कि उतना ही खाना जितना शरीर के लिए आवश्यक हो।

प्रश्न 20 (कठिन). बुद्ध की शिक्षाएँ आज के आधुनिक जीवन में कैसे प्रासंगिक हैं, जब सब कुछ स्थायी और 'मेरा' लगने लगा है?
उत्तर – आज के जीवन में जब हम चीज़ों को इकट्ठा करने और अपनी इच्छाओं को पूरा करने के पीछे भागते हैं, बुद्ध की शिक्षाएँ हमें याद दिलाती हैं कि कुछ भी स्थायी नहीं है। यह हमें सिखाता है कि हम भौतिक चीज़ों और क्षणिक सुखों के पीछे भागने के बजाय संतुलन और शांति पाने पर ध्यान दें, और अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रखकर ही मानसिक शांति मिल सकती है।

» बौद्ध संघ और उसके अनुयायी

प्रश्न 21 (आसान). बौद्ध संघ की स्थापना किसने की थी?
उत्तर – महात्मा बुद्ध ने

प्रश्न 22 (आसान). भिक्षुओं को 'भिक्खु' क्यों कहा जाता था?
उत्तर – क्योंकि वे भिक्षा पर निर्भर थे

प्रश्न 23 (मध्यम). शुरुआत में संघ में कौन शामिल हो सकते थे? और बाद में किसे अनुमति मिली?
उत्तर – शुरुआत में सिर्फ़ पुरुष, बाद में आनंद के आग्रह पर महिलाओं को भी अनुमति मिली.

प्रश्न 24 (कठिन). बौद्ध संघ की संचालन प्रणाली किस पर आधारित थी? इसमें निर्णय कैसे लिए जाते थे?
उत्तर – यह गणों और संघों की परंपरा पर आधारित थी. निर्णय बातचीत से सहमति बनाने की कोशिश करते थे, और अगर सहमति नहीं बनती थी तो मतदान द्वारा निर्णय लिया जाता था.

» स्तूपों का निर्माण और संरचना

प्रश्न 25 (आसान). स्तूपों में किसकी चीज़ें सहेजकर रखी जाती थीं?
उत्तर – बुद्ध के अवशेष या उनके द्वारा इस्तेमाल की गई पवित्र चीज़ें।

प्रश्न 26 (आसान). स्तूप के मुख्य गुंबद जैसे हिस्से को क्या कहते हैं?
उत्तर – अंड।

प्रश्न 27 (मध्यम). हर्मिका और यष्टि का क्या महत्व था?
उत्तर – हर्मिका देवताओं के घर का प्रतीक थी और यष्टि स्तूप के ऊपर से निकलकर छतरी को सहारा देती थी, जो सम्मान का प्रतीक थी।

प्रश्न 28 (कठिन). स्तूपों के निर्माण में समाज के किन-किन वर्गों का योगदान होता था? कोई दो उदाहरण दीजिए।
उत्तर – राजा (जैसे सातवाहन शासक), व्यापारी, शिल्पकार (जैसे हाथी दांत का काम करने वाले), भिक्षु और भिक्षुणियाँ, और आम लोग (महिलाएं और पुरुष) सभी दान देकर स्तूपों के निर्माण में योगदान करते थे।

» अमरावती और साँची: स्तूपों की नियति

प्रश्न 29 (आसान). अमरावती स्तूप की खोज किस वर्ष हुई थी?
उत्तर – 1796 में

प्रश्न 30 (आसान). किस स्तूप को 'स्थल पर ही संरक्षण' की नीति के तहत बचाया गया?
उत्तर – साँची का स्तूप

प्रश्न 31 (मध्यम). अमरावती के स्तूप का क्या हुआ था, संक्षेप में समझाइए?
उत्तर – स्थानीय राजा ने इसके पत्थर मंदिर बनाने के लिए इस्तेमाल किए, और अंग्रेज़ अधिकारियों ने इसकी मूर्तियों को मद्रास, कलकत्ता और लंदन भेज दिया. नतीजतन, यह आज एक छोटा सा टीला मात्र रह गया है.

प्रश्न 32 (कठिन). पुरातत्ववेत्ता एच.एच. कोल का भारतीय कलाकृतियों के संरक्षण को लेकर क्या विचार था, जिसने साँची को बचाने में मदद की?
उत्तर – एच.एच. कोल का मानना था कि 'इस देश की प्राचीन कलाकृतियों की लूट होने देना मुझे आत्मघाती और असमर्थनीय नीति लगती है.' उन्होंने सुझाव दिया कि असली कलाकृतियाँ खोज की जगह पर ही रहनी चाहिए और संग्रहालयों में केवल उनकी प्लास्टर की प्रतिकृतियाँ रखी जानी चाहिए. इसी सोच ने साँची को बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

» बौद्ध मूर्तिकला और उसके प्रतीक

प्रश्न 33 (आसान). बौद्ध मूर्तिकला में रिक्त स्थान किसका प्रतीक है?
उत्तर – बुद्ध के ध्यान की दशा या ज्ञान प्राप्ति का.

प्रश्न 34 (आसान). स्तूप को किस चीज़ का प्रतीक माना जाता था?
उत्तर – महापरिनिर्वाण (बुद्ध के देह त्याग) का.

प्रश्न 35 (मध्यम). चक्र का प्रयोग बौद्ध मूर्तिकला में क्यों किया गया था?
उत्तर – यह बुद्ध द्वारा सारनाथ में दिए गए पहले उपदेश का प्रतीक था, जिसे 'धर्मचक्र प्रवर्तन' कहते हैं.

प्रश्न 36 (कठिन). गजलक्ष्मी की मूर्ति बौद्ध स्तूपों पर क्यों दिखाई गई होगी?
उत्तर – गजलक्ष्मी सौभाग्य लाने वाली देवी मानी जाती हैं. हो सकता है कि उन्हें शुभ प्रतीक के रूप में दर्शाया गया हो, या कुछ लोग उन्हें बुद्ध की मां माया से भी जोड़ते थे. यह लोक परंपराओं और बौद्ध धर्म के मेल को दिखाता है.

» नई धार्मिक परंपराएँ: महायान और पौराणिक हिंदू धर्म

प्रश्न 37 (आसान). महायान बौद्ध धर्म में बुद्ध को क्या माना जाने लगा था?
उत्तर – मुक्तिदाता

प्रश्न 38 (आसान). बोधिसत्व कौन थे?
उत्तर – महान आत्माएँ जिन्होंने ज्ञान पाकर भी दूसरों की मदद के लिए निर्वाण नहीं लिया।

प्रश्न 39 (मध्यम). वैष्णव परंपरा में मुख्य देवता कौन थे और इसमें कौन सी प्रमुख अवधारणा जुड़ी थी?
उत्तर – विष्णु मुख्य देवता थे, और अवतारवाद की अवधारणा इससे जुड़ी थी।

प्रश्न 40 (कठिन). भक्ति परंपरा ने उपासक और ईश्वर के बीच संबंध को कैसे बदला?
उत्तर – भक्ति परंपरा ने उपासक और ईश्वर के बीच के संबंध को प्रेम और समर्पण के रिश्ते में बदल दिया, जहाँ भक्त व्यक्तिगत रूप से ईश्वर से जुड़ सकता था।

» मंदिरों का निर्माण और स्थापत्य कला

प्रश्न 41 (आसान). प्रारंभिक मंदिरों में मूर्ति को किस स्थान पर रखा जाता था?
उत्तर – गर्भगृह

प्रश्न 42 (आसान). गर्भगृह के ऊपर बने ऊँचे ढाँचे को क्या कहते थे?
उत्तर – शिखर

प्रश्न 43 (मध्यम). कृत्रिम गुफा मंदिर बनाने की परंपरा कब से शुरू हुई थी और इसका एक प्रमुख उदाहरण क्या है?
उत्तर – यह परंपरा ईसा पूर्व तीसरी सदी में अशोक के आदेश से शुरू हुई थी, और आठवीं सदी का एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर इसका सबसे विकसित और प्रमुख उदाहरण है।

» अतीत की दृश्य परंपराओं को समझना

प्रश्न 44 (आसान). जब यूरोपीय विद्वानों ने पहली बार भारतीय मूर्तियों को देखा, तो उन्हें वे कैसी लगीं?
उत्तर – उन्हें वे अजीबोगरीब और कई बार विद्रूप लगती थीं, क्योंकि वे उनकी पृष्ठभूमि और महत्त्व को नहीं समझते थे.

प्रश्न 45 (आसान). यूरोपीय विद्वानों ने भारतीय मूर्तियों को समझने के लिए किससे तुलना की?
उत्तर – उन्होंने उनकी तुलना प्राचीन यूनानी कला परंपरा से की, जिससे वे परिचित थे.

प्रश्न 46 (मध्यम). महाबलीपुरम के शैल शिल्प को समझने में कला इतिहासकारों को क्या समस्या आई?
उत्तर – उन्हें यह समस्या आई कि एक ही दृश्य (गंगा का अवतरण या अर्जुन की तपस्या) को लेकर पुराणों के विभिन्न ग्रंथों में अलग-अलग व्याख्याएँ मिलती थीं, जिससे यह तय करना मुश्किल था कि असली कथा क्या है.

प्रश्न 47 (कठिन). पुराने समय के लोगों के कुछ धार्मिक विश्वास और रीति-रिवाज आज हमें क्यों नहीं मिलते?
उत्तर – क्योंकि हो सकता है कि कई रीति-रिवाज और विश्वास स्थायी दृश्य माध्यमों (जैसे मूर्तियों या इमारतों) के रूप में दर्ज नहीं किए गए हों. वे दिन-प्रतिदिन के व्यवहार या मौखिक परंपराओं का हिस्सा रहे होंगे, जिन्हें हमेशा के लिए रिकॉर्ड करने की ज़रूरत महसूस नहीं की गई.

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. साँची स्तूप के संरक्षण में भोपाल के शासकों की क्या भूमिका थी?

› 1. पहले 19वीं सदी में यूरोपीय, जैसे फ्रांसीसी और अंग्रेज, साँची के तोरणद्वार को अपने संग्रहालय में ले जाना चाहते थे।

› 2. भोपाल की शासक, शाहजहाँ बेगम, ने उन्हें इसकी असली चीज़ ले जाने की इजाज़त नहीं दी, बल्कि प्लास्टर की प्रतिकृतियाँ बनाने को कहा।

› 3. बाद में उनकी उत्तराधिकारी सुल्तानजहाँ बेगम ने भी स्तूप के रख-रखाव के लिए पैसे दिए।

› 4. उन्होंने जॉन मार्शल जैसे इतिहासकारों को वहाँ रहकर काम करने और स्तूप पर किताबें लिखने के लिए आर्थिक मदद भी दी।

› 5. इस तरह, इन बेगमों के समझदार और दूरदर्शी निर्णयों के कारण साँची स्तूप अपनी मूल जगह पर सुरक्षित रह पाया।

› 6. उनकी इस भूमिका ने साँची को रेल ठेकेदारों या उन लोगों से भी बचाया जो इसे विदेश ले जाना चाहते थे।

उत्तर – भोपाल की शाहजहाँ बेगम और सुल्तानजहाँ बेगम ने यूरोपीय शक्तियों को स्तूप को विदेश ले जाने से रोका और उसके रख-रखाव, मरम्मत और अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण वित्तीय सहायता दी, जिससे यह आज भी सुरक्षित है।

उदाहरण 2. ईसा पूर्व प्रथम सहस्राब्दि में कौन-कौन से प्रमुख विचारकों का उदय हुआ और वे किस प्रकार के प्रश्नों पर चिंतन कर रहे थे?

› सबसे पहले याद करें कि 'प्रथम सहस्राब्दि' का मतलब है 1000 ईसा पूर्व से 1 ईसा पूर्व तक का समय।

› इस काल में भारत में महावीर (जैन धर्म) और बुद्ध (बौद्ध धर्म) जैसे प्रमुख विचारक सामने आए।

› अन्य देशों में ईरान में ज़रथुस्त्र, चीन में खुंगत्सी, और यूनान में सुकरात, प्लेटो, अरस्तु जैसे महान दार्शनिक हुए।

› ये विचारक मुख्य रूप से जीवन के अर्थ, मृत्यु के बाद क्या होता है, पुनर्जन्म, कर्मों का फल, और इंसान का इस ब्रह्मांड से क्या संबंध है, ऐसे गहरे दार्शनिक प्रश्नों पर चिंतन कर रहे थे।

उत्तर – ईसा पूर्व प्रथम सहस्राब्दि में भारत में महावीर और बुद्ध, ईरान में ज़रथुस्त्र, चीन में खुंगत्सी, यूनान में सुकरात, प्लेटो और अरस्तु जैसे प्रमुख विचारक उभरे। वे जीवन का अर्थ, मृत्यु के बाद जीवन की संभावना, पुनर्जन्म और ब्रह्मांड में मानव के स्थान जैसे मौलिक प्रश्नों पर चिंतन कर रहे थे।

उदाहरण 3. जैन धर्म के अनुसार, कर्म के चक्र से मुक्ति कैसे प्राप्त की जा सकती है?

› पहला कदम है संसार का त्याग। हमें सांसारिक सुखों और मोह माया से ऊपर उठना होगा।

› दूसरा, कठोर तपस्या और त्याग का जीवन अपनाना। इसमें शारीरिक और मानसिक दोनों तरह के त्याग शामिल हैं।

› तीसरा, पांच महाव्रतों का पालन करना: अहिंसा (किसी जीव को न सताना), सत्य (झूठ न बोलना), अस्तेय (चोरी न करना), ब्रह्मचर्य (इंद्रियों पर नियंत्रण), और अपरिग्रह (धन-संग्रह न करना)।

› चौथा, विहारों (मठों) में निवास करना, जहाँ साधु और साध्वी इन नियमों का पालन करते हुए मोक्ष की ओर बढ़ते हैं।

उत्तर – कर्म के चक्र से मुक्ति के लिए संसार का त्याग, कठोर तपस्या और पांच महाव्रतों का पालन करना अनिवार्य है।

उदाहरण 4. बुद्ध का बचपन का नाम क्या था और उन्होंने किस चीज़ को देखकर गृहत्याग का फैसला लिया?

› पहला चरण: बुद्ध का बचपन का नाम सिद्धार्थ था.

› दूसरा चरण: उन्होंने अपने महल के बाहर पहली बार एक बूढ़े व्यक्ति, एक बीमार व्यक्ति और एक मृत शरीर (लाश) को देखा.

› तीसरा चरण: इसके अलावा, उन्होंने एक शांत संन्यासी को भी देखा.

› चौथा चरण: इन सब दृश्यों को देखकर ही उन्होंने जीवन के दुखों से मुक्ति का मार्ग खोजने के लिए गृहत्याग का फैसला किया.

उत्तर – बुद्ध का बचपन का नाम सिद्धार्थ था. उन्होंने एक बूढ़े व्यक्ति, एक बीमार व्यक्ति, एक मृत शरीर और एक संन्यासी को देखकर गृहत्याग का फैसला लिया.

उदाहरण 5. एक बच्चा बहुत शरारती है और कभी पढ़ाई नहीं करता, सिर्फ खेलता रहता है. वहीं दूसरा बच्चा सिर्फ पढ़ाई करता है और कभी खेलता नहीं, बीमार रहता है. बुद्ध के मध्यम मार्ग के अनुसार दोनों को क्या सलाह दी जाएगी?

› सबसे पहले, दोनों बच्चों की समस्या को पहचानें: एक अति-मनोरंजन में है और दूसरा अति-अध्ययन में.

› बुद्ध का मध्यम मार्ग कहता है कि किसी भी चीज की अति ठीक नहीं है.

› पहला बच्चा जो सिर्फ खेलता है, उसे समझाया जाएगा कि मनोरंजन के साथ-साथ पढ़ाई भी उतनी ही ज़रूरी है, ताकि उसका भविष्य अच्छा हो सके.

› दूसरा बच्चा जो सिर्फ पढ़ाई करता है, उसे सलाह दी जाएगी कि स्वस्थ रहने और मन को शांत रखने के लिए खेलकूद भी उतना ही ज़रूरी है.

› दोनों को समझाया जाएगा कि पढ़ाई और खेलकूद के बीच संतुलन बनाना ही सही रास्ता है, जिससे वे खुश और सफल रह सकें.

उत्तर – दोनों बच्चों को 'मध्यम मार्ग' अपनाना चाहिए – पढ़ाई और खेलकूद के बीच संतुलन बनाना चाहिए, ताकि उनका

शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य ठीक रहे और वे जीवन में सफलता पा सकें.

उदाहरण 6. बौद्ध संघ में भिक्षुओं और भिक्खुनियों के लिए जीवन-यापन के क्या नियम थे?

› संघ में भिक्षु और भिक्खुनी बहुत सादा जीवन जीते थे.

› उनके पास ज़रूरत से ज़्यादा कुछ भी नहीं होता था, सिर्फ़ अपने दैनिक उपयोग की चीज़ें.

› वे दिन में एक बार दान में मिला भोजन ग्रहण करते थे. इसलिए उन्हें 'भिक्खु' या 'भिक्खुनी' कहा जाता था, क्योंकि वे भिक्षा पर निर्भर थे.

› विनय पिटक में उनके लिए कई नियम थे, जैसे कंबल को छह साल तक इस्तेमाल करना या भोजन सिर्फ़ ज़रूरत भर ही लेना और दूसरों के साथ बाँटना.

उत्तर – भिक्षु और भिक्खुनी सादा जीवन जीते थे, दान पर निर्भर थे, और विनय पिटक के नियमों का पालन करते थे, जिसमें संयम और सहभागिता महत्वपूर्ण थी.

उदाहरण 7. सांची के महास्तूप की संरचना के मुख्य पाँच भागों के नाम और उनका कार्य बताइए।

› सबसे पहले, निचला गोल हिस्सा होता है 'अंड'. यह मुख्य गुंबद जैसा होता है और इसके अंदर बुद्ध के अवशेष रखे होते हैं.

› दूसरा, अंड के ठीक ऊपर एक 'हर्मिका' होती है. यह एक छोटी, वर्गाकार रेलिंग या छज्जे जैसा ढाँचा होता है, जिसे देवताओं के घर का प्रतीक माना जाता है.

› तीसरा, हर्मिका से एक सीधा डंडा ऊपर निकलता है, जिसे 'यष्टि' कहते हैं. यह एक तरह से स्तूप की रीढ़ होती है.

› चौथा, यष्टि के ऊपर अक्सर एक 'छत्री' लगी होती थी. यह सम्मान और प्रतिष्ठा का प्रतीक थी.

› और पाँचवां, पूरे स्तूप के चारों ओर एक 'वेदिका' यानी पत्थर की बाड़ या घेरा होता था. यह पवित्र स्थल को आम दुनिया से अलग करती थी और लोगों को अंदर जाने का रास्ता दिखाती थी.

उत्तर – सांची के महास्तूप के मुख्य पाँच भाग: अंड (अवशेष), हर्मिका (देवताओं का घर), यष्टि (मस्तूल), छत्री (सम्मान), और वेदिका (पवित्र सीमा).

उदाहरण 8. बताइए कि अमरावती और साँची के स्तूपों की 'नियति' में क्या अंतर था और इस अंतर का मुख्य कारण क्या था?

› सबसे पहले अमरावती की कहानी देखते हैं. अमरावती का स्तूप 1796 में मिला था, तब लोग प्राचीन कलाकृतियों के महत्व को पूरी तरह नहीं समझते थे. एक स्थानीय राजा ने मंदिर बनाने के लिए इसके पत्थर निकाल लिए, सोचकर कि इसमें खजाना हो सकता है. फिर अंग्रेज़ अफ़सरों ने इसकी मूर्तियों को मद्रास, कलकत्ता और यहाँ तक कि लंदन तक भेज दिया. नतीजा ये हुआ कि आज अमरावती का महाचैत्य सिर्फ़ एक छोटा सा मिट्टी का टीला बचा है, उसकी सारी शान खत्म हो गई है.

› अब साँची की बात करें. साँची का स्तूप 1818 में खोजा गया. तब तक कुछ पुरातत्वविदों, जैसे एच.एच. कोल, ने यह बात समझ ली थी कि किसी भी पुरातात्विक अवशेष को उसकी जगह से हटाना सही नहीं है, बल्कि उसे वहीं पर संरक्षित करना ज़्यादा ज़रूरी है. इसलिए, जब साँची के तोरणद्वारों को भी लंदन या पेरिस ले जाने की बात हुई, तो कुछ समझदार लोगों ने इसे वहीं रहने दिया. इसलिए, साँची का स्तूप आज भी अपने मूल रूप में खड़ा है.

› तो मुख्य अंतर यह रहा कि अमरावती की खोज तब हुई जब संरक्षण का महत्व नहीं समझा गया था, जबकि साँची की खोज बाद में हुई जब इस महत्व को समझा जाने लगा था.

उत्तर – अमरावती का स्तूप पूरी तरह से नष्ट हो गया जबकि साँची का स्तूप आज भी सुरक्षित है. इसका मुख्य कारण यह था कि अमरावती की खोज पहले हुई थी जब पुरातत्वविदों को स्थल पर ही संरक्षण का महत्व नहीं पता था, जबकि साँची की खोज बाद में हुई जब इस नीति को अपना लिया गया था.

उदाहरण 9. साँची के एक तोरणद्वार पर एक महिला की मूर्ति पेड़ पकड़कर झूलती हुई दिखती है. इसका क्या अर्थ है?

› पहला कदम: हमें समझना होगा कि यह मूर्ति सीधे-सीधे बौद्ध धर्म से जुड़ी हुई नहीं दिखती.

› दूसरा कदम: हम साहित्यिक परंपराओं को देखेंगे. संस्कृत साहित्य में 'शालभंजिका' का वर्णन मिलता है.

› तीसरा कदम: शालभंजिका एक लोक देवी थीं, जिनके छूने से पेड़ में फूल खिलते थे और फल लगते थे. ये शुभ मानी जाती थीं.

› चौथा कदम: तो यह मूर्ति बौद्ध धर्म में लोक परंपराओं के मेल को दर्शाती है. इसका मतलब है कि बौद्ध धर्म में आने वाले लोगों ने अपनी पुरानी मान्यताओं और प्रतीकों को भी इसमें शामिल किया, ताकि लोगों को यह धर्म अपनाना आसान लगे.

उत्तर – यह मूर्ति शालभंजिका की है, जो लोक परंपराओं से ली गई एक शुभ प्रतीक है. यह दर्शाता है कि बौद्ध धर्म में लोक विश्वासों और प्रतीकों को भी अपनाया गया था, जिससे यह और अधिक लोकप्रिय हो सके.

उदाहरण 10. प्रश्न: महायान बौद्ध धर्म और पौराणिक हिंदू धर्म के मुख्य विचार क्या थे, खासकर मुक्तिदाता और भक्ति की अवधारणा के संदर्भ में?

› स्टेप 1: पहले महायान बौद्ध धर्म को समझो. इसमें बुद्ध को सिर्फ़ एक ज्ञानी पुरुष नहीं, बल्कि एक 'मुक्तिदाता' माना गया. यानी जो दूसरों को दुख से निकाल सकते हैं.

› स्टेप 2: इसी में बोधिसत्व की अवधारणा आई. बोधिसत्व वो महान आत्माएँ थीं जिन्होंने ज्ञान तो पा लिया था, लेकिन दूसरों की मदद करने के लिए खुद निर्वाण नहीं लिया, बल्कि धरती पर ही रुक गए.

› स्टेप 3: अब पौराणिक हिंदू धर्म की बात करते हैं. इसमें 'वैष्णव' परंपरा, जहाँ विष्णु भगवान मुख्य थे, और 'शैव' परंपरा, जहाँ शिव भगवान मुख्य थे, उभर कर आईं.

› स्टेप 4: इन परंपराओं में सबसे ख़ास था 'भक्ति' का उदय. यहाँ भक्त और भगवान के बीच का रिश्ता प्यार और समर्पण का हो गया. भगवान को एक दोस्त या माता-पिता जैसा माना गया.

› स्टेप 5: वैष्णव धर्म में 'अवतारवाद' बहुत महत्वपूर्ण हुआ. इसमें माना गया कि जब-जब दुनिया में पाप बढ़ता है, भगवान विष्णु अलग-अलग रूपों में धरती पर अवतार लेते हैं, जैसे राम या कृष्ण, ताकि दुनिया को बचा सकें.

उत्तर – महायान बौद्ध धर्म में बुद्ध को मुक्तिदाता और बोधिसत्वों को परोपकारी माना गया, जबकि पौराणिक हिंदू धर्म में वैष्णव और शैव परंपराओं के साथ भक्ति और अवतारवाद प्रमुख विचार बन गए, जहाँ ईश्वर और भक्त के बीच प्रेम और समर्पण का संबंध स्थापित हुआ।

उदाहरण 11. मंदिरों के शुरुआती स्वरूप और बाद के विकास की मुख्य विशेषताओं का वर्णन करें।

› सबसे पहले, मंदिर एक छोटे, चौकोर कमरे के रूप में बनाए जाते थे। इस कमरे को 'गर्भगृह' कहते थे, जहाँ मुख्य देवता की मूर्ति स्थापित की जाती थी। इसमें एक दरवाज़ा होता था जिससे भक्त अंदर जाकर पूजा कर सकें।

› धीरे-धीरे, इन गर्भगृहों के ऊपर एक ऊँचा ढाँचा बनने लगा जिसे 'शिखर' कहा जाता था। इससे मंदिर और भव्य दिखने लगे।

› बाद के समय में, मंदिरों का स्थापत्य कला और भी विकसित हुआ। मंदिरों के साथ बड़े सभास्थल (मंडप), ऊँची दीवारें, और सुंदर तोरण द्वार (प्रवेश द्वार) भी जुड़ने लगे। कुछ मंदिरों में पानी की व्यवस्था भी की जाने लगी थी।

› इसी दौरान, कुछ मंदिर पहाड़ियों को काटकर कृत्रिम गुफाओं के रूप में भी बनाए गए। ये गुफाएँ अशोक के समय से ही बन रही थीं, लेकिन आठवीं सदी में एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर इसका सबसे अद्भुत उदाहरण है, जहाँ पूरी पहाड़ी को काटकर एक भव्य मंदिर का रूप दिया गया।

उत्तर – शुरुआती मंदिर गर्भगृह (चौकोर कमरा) के रूप में थे, जिसमें मूर्ति होती थी। बाद में शिखर, सभास्थल, तोरण द्वार और दीवारें जोड़ी गईं, और पहाड़ियों को काटकर गुफा मंदिर भी बनाए गए, जिससे स्थापत्य कला का अभूतपूर्व विकास हुआ।

उदाहरण 12. मान लीजिए आपको एक प्राचीन भारतीय मूर्ति मिलती है जिसमें कई सिर और भुजाएँ हैं. आप इसे पहली बार देख रहे हैं और इसे समझना चाहते हैं. आप क्या कदम उठाएँगे?

› पहला कदम: मैं मूर्ति को ध्यान से देखूँगी – उसकी बनावट, पहनावा, चेहरे के भाव, और उसमें दिख रही हर बारीक चीज़ को समझने की कोशिश करूँगी.

› दूसरा कदम: फिर मैं इससे जुड़ी ऐतिहासिक जानकारी या धार्मिक ग्रंथों को खोजने की कोशिश करूँगी. जैसे, यह मूर्ति किस देवी या देवता की हो सकती है? उनका वर्णन ग्रंथों में कैसे किया गया है?

› तीसरा कदम: मैं उस समय के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ को भी समझने की कोशिश करूँगी जब यह मूर्ति बनी थी. उस समय लोगों के क्या विश्वास थे, वे क्या मानते थे?

› चौथा कदम: अगर मुझे इसके बारे में कोई लिखित साक्ष्य नहीं मिलता, तो मैं अन्य समान कलाकृतियों या उस क्षेत्र की अन्य धार्मिक परंपराओं से तुलना करके एक अनुमान लगाने की कोशिश करूँगी.

› पाँचवां कदम: लेकिन इन सबके बावजूद, मैं यह स्वीकार करूँगी कि शायद मैं उस मूर्ति का पूरा मतलब या जिसने उसे बनाया था, उसकी असली भावना को पूरी तरह कभी न समझ पाऊँ.

उत्तर – किसी प्राचीन मूर्ति को पूरी तरह समझने के लिए हमें दृश्य साक्ष्य (मूर्ति खुद) और लिखित साक्ष्य (ग्रंथ, इतिहास) दोनों की मदद लेनी चाहिए, और यह भी मानना चाहिए कि फिर भी कुछ बातें हमेशा अनजानी रह सकती हैं.

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है कि साँची स्तूप के संरक्षण में भोपाल की बेगमों की क्या भूमिका थी। इसे ध्यान से समझना और याद रखना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर 'प्रथम सहस्राब्दि के दार्शनिक विकास' या 'नए धर्मों के उदय के कारण' पर सीधा प्रश्न बनकर आता है। विभिन्न विचारकों के नाम और उनके चिंतन के मुख्य बिंदुओं को ज़रूर याद रखना।

• जैन धर्म के सिद्धांतों और महावीर के संदेश पर अक्सर छोटे या मध्यम प्रश्न आते हैं, खासकर अहिंसा के महत्व और पंच महाव्रतों पर।

• यह हिस्सा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है. बुद्ध के जीवन की मुख्य घटनाओं, खासकर गृहत्याग के कारणों और ज्ञान प्राप्ति के सफर को अच्छे से याद रखना.

• बौद्ध संघ के लोकतांत्रिक संचालन और इसमें विभिन्न सामाजिक वर्गों के लोगों के शामिल होने पर अक्सर प्रश्न पूछे जाते हैं. इसके नियमों और पहली भिक्खुनी का नाम याद रखना ज़रूरी है.

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है! 'स्तूपों की संरचना' पर सीधा सवाल आ सकता है, इसलिए सभी भागों के नाम और उनका महत्व अच्छे से याद कर लेना.

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है. अक्सर यहाँ से प्रतीकों के अर्थ या शालभंजिका जैसी लोक परंपराओं पर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं. हर प्रतीक का सही अर्थ याद रखना और उसे स्पष्ट करना सीखो.

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है. अक्सर महायान और हीनयान के बीच अंतर या भक्ति परंपरा पर सीधा सवाल आता है. इसे अच्छे से समझकर जाना.

• एलोरा के कैलाशनाथ मंदिर और बराबर की गुफाओं के उदाहरणों को याद रखना, ये अक्सर बोर्ड परीक्षाओं में पूछे जाते हैं।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दिखाता है कि इतिहास को समझने के लिए केवल 'क्या हुआ' से ज़्यादा 'कैसे समझा गया' भी ज़रूरी है. यूरोप के विद्वानों की शुरुआती सोच, बुद्ध की मूर्तियों का उदाहरण, और महाबलीपुरम के शैल शिल्प का विश्लेषण, इन सब पर प्रश्न आ सकते हैं.

एक नज़र में रिवीज़न

› साँची स्तूप: 19वीं सदी में खोजा गया, भोपाल बेगमों द्वारा संरक्षित।

› ईसा पूर्व प्रथम सहस्राब्दि: महावीर, बुद्ध, नए विचार, वाद-विवाद का काल।

› जैन धर्म, महावीर (24वें तीर्थंकर), अहिंसा, कर्म से मुक्ति, पांच महाव्रत।
› सिद्धार्थ ने बुढ़ापा, बीमारी, मृत्यु, संन्यासी देखकर गृहत्याग कर ज्ञान पाया.
› बौद्ध संघ: बुद्ध के शिष्य, सादा जीवन, लोकतांत्रिक संचालन, सभी वर्गों का समावेश.
› स्तूप: बुद्ध के अवशेष/स्मृतिस्थल, अंड, हर्मिका, यष्टि, छत्री, वेदिका प्रमुख अंग.
› बौद्ध मूर्तिकला में जातक कथाएँ, प्रतीक (रिक्त स्थान, स्तूप, चक्र, बोधिवृक्ष) व लोक परंपराएँ (शालभंजिका) शामिल हैं.
› महायान (बुद्ध मुक्तिदाता, बोधिसत्व), पौराणिक हिंदू (वैष्णव, शैव, भक्ति, अवतारवाद)
› मंदिरों में गर्भगृह, शिखर का विकास; गुफा मंदिरों का निर्माण।
› अतीत की दृश्य परंपराओं को समझना जटिल: यूरोपीय व्याख्याएँ, लिखित/दृश्य तालमेल, विश्वासों की सीमाएँ.